श्रवण एवं वाचन कौशल

(क) दिल्ली आने के बाद भी दादी आज भी पोंगल उसी उत्साह से मनाती हैं।

(ख) उत्तर भारत में जिन दिनों मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है उन्हीं दिनों दक्षिण में पोंगल का पर्व मनाया जाता है।

(ग) पोंगल से पहले रात को पुरानी वस्तु की होली-सी जलाते हैं।

(घ) पोंगल पर विशेष रूप से सूर्य की पूजा की जाती है।

(ङ) इस दिन भगवान सूर्य को जो भोग लगाया जाता है, उसे पोंगल कहते हैं।

2. शिक्षक/शिक्षिका शब्दों का उच्चारण करेंगे। विद्यार्थी सुनकर बोलेंगे और लिखेंगे।

3. (क) चेन्नई में

(ख) तमिलनाडु का

(ग) 'तई' नामक तमिल महीने में

(घ) बैलों की सहायता से

(ङ) बैलगाड़ियों की

(ख) कृषक स्त्रियाँ खेतों में जाकर भगवान से अच्छी फ़सल होने की प्रार्थना करती हैं।

(ग) हल्दी और धान को पवित्र माना जाता है। ये दोनों फ़सलें एक साथ होती हैं। फ़सल समेटने के बाद खुशी प्रकट करने के लिए यह त्योहार मनाया जाता है।

(घ) हमारे देश में गाय को माता के समान माना जाता है और उसकी सेवा की जाती है क्योंकि गाय हमें दूध के साथ-साथ बछड़े भी देती है जो खेती के काम आते हैं।

2. (क) पोंगल से एक दिन पहले रात को पुरानी वस्तुओं को जलाते हैं जोकि पुरानी परंपराओं और कुप्रथाओं को छोड़ने का प्रतीक है। यह कार्य 'पोही' कहलाता है। लोग अच्छी चीज़ों को ग्रहण करने की प्रतिज्ञा भी करते हैं।

(ख) पोंगल से अगले दिन 'मोट्टू पोंगल' मनाया जाता है। इस दिन पशुओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है। बैलों को सजाया जाता है और गलियों में जुलूस निकाले जाते हैं और बैलगाड़ियों की दौड़ करवाई जाती है।

(ग) पर्व हमारे जीवन में सुखद परिवर्तन लेकर आते हैं और उसमें हर्ष, उल्लास और नवीनता का संचार करते हैं। पर्वों के आने पर लोग प्रसन्नचित्त होकर उनमें भाग लेते हैं। इनमें समाज, देश और राष्ट्र के लिए कोई-न-कोई विशेष संदेश निहित होता है। लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं और आपसी कटुता समाप्त हो जाती है।

(घ) प्रत्येक पर्व में मानव समाज व राष्ट्र के लिए कोई-न-कोई संदेश निहित होता है। सभी पर्व हमें आपसी कटुता एवं वैमनस्य को भुलाकर शत्रु से भी प्रेम करने का संदेश देते हैं। इनके पीछे समाज के उत्थान का महान उद्देश्य अवश्य होता है। ये पर्व अधर्म पर धर्म की और असत्य पर सत्य की विजय का संदेश देते हैं।

3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

शब्द संपदा

1. (क) कृषि (ख) भगिनी (ग) आकाश (घ) भानु

2. (क) अपवित्र (ख) सामान्य (ग) निरुत्साह
(घ) कृतघ्न (ङ) पुराना (च) निर्गमन

गठधारित व्याकरण

1. (क) चरित्र मित्र मात्र (ख) प्रतिज्ञा आज्ञा अवज्ञा
(ग) प्रकाश प्रहार प्रवाह (घ) प्रतीक्षा परीक्षा अक्षि
(ङ) पत्ता गत्ता छत्ता

2. (क) ऋतु (ख) कृषि (ग) रिश्ता
(घ) कृषक (ङ) रिवाज़ (च) आकृति

3. (क) पावन (ख) किसान (ग) खेती
(घ) नवीन/नव (ङ) मातृ (च) सूरज

4. (क) भूतकाल – अगले दिन पोंगल की धूम मच गई।
भविष्यत्काल – अगले दिन पोंगल की धूम मच जाएगी।
(ख) भूतकाल – नए वस्त्र और नए बर्तन खरीदे गए।
भविष्यत् काल – नए वस्त्र और नए बर्तन खरीदे जाएँगे।
(ग) भूतकाल – चावल के आटे से फर्श पर सुंदर-सुंदर आकृतियाँ बनाई जाएँगी।
भविष्यत् काल – चावल के आटे से फर्श पर सुंदर-सुंदर आकृतियाँ बनाई जाएँगी।
(घ) भूतकाल – पोंगल पर विशेष रूप से सूर्य भगवान की पूजा-अर्चना की गई।
भविष्यत् काल – पोंगल पर विशेष रूप से सूर्य भगवान की पूजा-अर्चना की जाएगी।

Shot on A1 Plus

5. (क) हरे-भरे - गुणवाचक विशेषण

(ख) तीन-चार - निश्चित संख्यावाचक

(ग) पुराने - गुणवाचक

(घ) दक्षिण - गुणवाचक

गतिविधियाँ

1. (क) सूर्य निकलते ही आकाश में किरणों का प्रकाश फूट पड़ता है।

(ख) भौंरों का गुंजन संगीत का समां बाँध देता है और तितलियाँ फूलों पर मँडराने लगती हैं।

(ग) धार्मिक स्थलों पर ईश्वर की प्रार्थना से प्रभात का स्वागत होता है।

(घ) आकाश-गगन, प्रातःकाल-सुबह, पुष्प-फूल, जलज-कमल